तृतीय अध्याय

' मनुष्य के रूप ' उपन्यास के पात्र स्वम् चरित्र-चित्रण -

तृतीय अध्याय

' मनुष्य के रूप ' उपन्यास के पात्र एवम् चरित्र-चित्रण --

पात्र - चित्रण --

' मनुष्य के रूप ' एक सामाजिक उपन्यास है। साथ ही राजनीति और रोमान्स से मिश्रित कथाबीज को प्रस्तुत करनेवाला यशपालजी का चौथा प्रयास है। इसमें यशपाल जी ने मनुष्य के विभिन्न रूपोंको जाननेका यत्न किया है। मनुष्य का व्यक्तित्व जन्मगत नहीं, बल्कि बनाया जाता है। व्यक्तित्व बनाने की इस प्रक्रिया में परिवेश का योगदान महत्वपूर्ण रहता है। ' परिवेश मनुष्य के व्यक्तित्व को मूल व्यक्तित्व से कभी कभी इतना भिन्न बना डालता है कि, इन्सान की दृष्टि उसे मानने के लिए स्विकृत नहीं होती। '[१]

उपन्यास में एक ओर धनसिंह,भूषण,सुतलीवाला,बैरिस्टर सरोला,लाला ज्वालासहाय,बरकत,बनवारी तथा और भी पुरूष पात्रों की भीड सी है, तो दूसरी ओर सोमा,मनोरमा,बहुएँ आदि नारी पात्र है। जहाँ तक पात्रों का सवाल है वे किसी न किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते दृष्टिगोचर होते हैं। यह उपन्यास घटनाप्रधान है। घटना और परिस्थितिके अनुरुप पात्रोंका बदलना यहाँ अनिवार्य हो गया है। सभी पात्रोंका करीब से आकलन करने के बाद इस बातका अंदाज होता है कि,' सोमा ' इस उपन्यास की प्रमुख नायिका है।' सोमा ' एक परम्परागत पीडित नारी है जो विधवा पहाडन है।' मनुष्य के रूप ' उपन्यास के सभी पात्र

---

१ डॉ.सुनीलकुमार लवटे - यशपाल - व्यक्तित्व एवं कृतित्व - पृ.१६७।

विभिन्न वर्गके होनेके कारण उनसे संबंधित घटनाओं के सामूहिक परिणाम के रूप में उपन्यास समाज की प्रतिछवि बन गया है ।[१]

प्रस्तुत उपन्यास में पहाडी जीवन,तत्कालीन समाज में विधवा नारी की स्थिती,नारी प्रेम की समस्या तथा नैतिकता की समस्या,आजाद हिंद सेना के कार्य-कलाप,कॉंग्रेस के असहयोग अंदोलन आदि घटनाओं का इस उपन्यास के माध्यम से व्यापक आकलन हुआ है ।

यशपाल की 'नारी'विषयक विचारधारा परम्परागत न होकर आधुनिक है । उनके उपन्यासों में नारी पात्र रीतिकालीन नारी के एकदम विपरीत है, जो आजके प्रगतिशील युग में राजनीतिक क्षेत्र में पदार्पण कर गृहस्थ के पराधि सीमा से बाहर निकल खुली हवा में सांस लेना चाहती है । यशपाल ने नारी के समी रूपों को उजागर कर भारतीय नारी की सुप्त चेतना को जगाने में पर्याप्त योग दिया है ।

यशपाल ने अपने इस उपन्यास में पात्र-चित्रण की दृष्टिसे पात्रोंको गतिशील रखने का विशेष यत्न किया है ताकि, हर पात्र सजीव लगे, सोमा और धनसिंह का उध्दरण इस संदर्भ में ध्यातव्य है । सोमा और धनसिंह इन दो प्रमुख पात्रों के साथ मनोरमा और भूषण इन दो गौण पात्रोंको छोड दिया जाय,तो शेष पात्रोंका विकास घटनाओं के अनुरुप हुआ है ।

सोमा --

१) पीडित और विधवा नारी --

यशपाल जी ने बताया है कि , सोमा परम्परागत पीडित नारी है ।

---

१ डॉ.सुनीलकुमार लवटे - यशपाल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व - पृ.१७९ ।

तत्कालीन समाज में रूढीगत अंधश्रध्दा और पुराने रूढीगत समाज में पीडित नारी, की वेदनाओं को प्रकट करने का कार्य यहाँ यशपाल ने 'सोमा' के रूप में प्रक्षेपित किया है। इस उपन्यास में सोमा एक नायिका के रूप में प्रस्तुत है। उपन्यास के आरंभ में वह एक जवान नारी के रूप में हमारे सामने आती है। जवानी में सुख चैनकी जिन्दगी उसके नसीब नहीं थी। हालात और मजबूरी का सामना करते रहना यही उसकी किस्मत में लिखा था। किस्मत का लिखा वह भला कैसे बदल सकती थी। पुरानी सामाजिक रूढियों के अनुसार सोमा का कम उम्र में विवाह हुआ था। पति की असमय मौतने उसे समय से पहले ही विधवा बना दिया था। ससुराल में अपने नसीब से जूझती, अत्याचारों की चक्की में पीस के रह गयी थी। घरवाले उसके साथ पशुसा व्यवहार करते थे। अपने मुकद्दर पर रोने के सिवा उसके पास और कोई चारा नहीं था। लेखक ने उस को हमदर्दी का पात्र बनाकर उसकी ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट किया है। वह अपनी व्यथा इन शब्दों में व्यक्त करती है --- " यह लोग समझते है कि इन्होंने चारसौ रूपये में पशु खरीदा है। जीता है तो काम इनका, और मर जाय तो चाम इनका, जब तक हाडगोड चलाते है, कैसे छोड दे ? "[१] सोमा के इन शब्दों में समस्त नारी जाति की व्यथा वेदना मुखर हुई है। सामाजिक रूढियों में फँसी वह एक अभागिन और अबला हिरनी है।

२) प्रेम की भूखी नारी --

ऐसी हालत में सोमा को तनिक सी हमदर्दी उसके लिए उजाले की किरण न बने यह कैसे सम्भव हो सकता है ? दुर्घटना में परिचित ड्राइवर धनसिंह उसका हमदर्द बना, उसके टूटे हुओ दिलका एक मात्र सहारा बना। सोमा तो अन्याय और अत्याचारों की चक्की में पीस रही थी लेकिन धनसिंह के सहारे से उसकी अनुभूति में परिवर्तन आ गया। धनसिंह ने सोमा को भाग चलने के लिए अनुरोध किया था, वह शुरु में उसके लिए तैयार नहीं थी, क्योंकि वह परम्परागत संस्कारों में पली होने

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.१७।

के कारण भाग्यवादिनी है। धनसिंह की हर मुलाकात में उसकी आत्मीयता देखकर बार-बार यही कहती है," जी, तुम बड़े भले आदमी हो जी ,"[१] उसके अल्हड संस्कार धनसिंह को सोमा की ओर आकृष्ट होने के लिए विवश करते है।

३) वासना का शिकार --

सोमा उपन्यास का सर्वाधिक गतिशील पात्र है। वह धनसिंह की हमदर्दी और सहारे की नींवपर घर छोड देती है। उसका यह घर छोडना उसके जीवन में अनेकों रूप दिखाता है। उसके जीवन में दु:ख के साथ-साथ सुख भी आते हैं, जो उसके जीवन को पिछली जिन्दगी से जादा विकास की ओर ले जाते है। वह मन ही मन में धनसिंह को अपना सब कुछ मानने लगती है। यहाँ तक की धनसिंह की गिरफ्तारी पर उसकी रक्षा के लिए पुलिस को अपना सर्वस्व अर्पण करती है। वहाँ से उसके जीवन में पुरुष की वासना का शिकार बनने का दौर शुरु होता है जो अंत तक नहीं रूकता।

४) चतुर नारी --

आरम्भ में भोली भाली सोमा में बैरिस्टर सरोला के यहाँ आनेपर काफी परिवर्तन होता है। नौकरानी के रूप में उस घर में आयी सोमा अपने रूप-लावण्य के कारण बैरिस्टर के आकर्षण का केन्द्र बनती है। जब मनोरमा और घर के सारे सदस्य उसे घर का ही एक सदस्य समझकर घरका कारोबार उसपर सौंपते है, तो सोमा उसे बड़े ही परिश्रम और लगन से निभाती है। साथ ही अपने गृहस्थिन बनने की क्षमता का परिचय देती है। बैरिस्टर के साथ उसका प्रणय परिस्थितिसे समायोजन का उपाय था।

सरोला के घर से निकाल देने पर नयी बात सिखने और समझनेकी उसकी

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.१६।

12817

A

सूझाबूझा, तत्परता, चतुरता उसे अभिनेत्री की संज्ञा देती है । अनपढ और गँवार होते हुअे भी जीवन की हर चुनौती और संघर्ष का सामना बडी ही फुर्ती और साहस से करती है । सुंदरता यह प्रकृति की देन थी ही उसके पास, साथ ही साथ नृत्य, अभिनय, गीत के परिश्रम से वह बनवारी, सुतलीवाला जैसे फिल्मी व्यवसायों में माहिर लोगोंको अपने हुस्न और परिश्रम से दीवाना बना देती है ।

५) <u>बेबस और मजबूर नारी</u> --

जब उसे बैरिस्टर का घर छोडनेपर मजबूर होना पडा तो उसके मुँह से आह निकली और वह फूट फूटकर रोने लगी " हाय कहाँ चली जाऊँ ? क्या इसीलिए मुझे पहाड से लाये थे ? "[१] जब वह गाडी में बैठी तो उसे उसका खुदका आगेका ठिकाना मालूम नहीं था । बरकत के पूछने पर उसने कहा " मुझे कहीं नदी पर या जंगल में पहुँचा दो "[२] इस में उसकी उस वक्त की बेबसी झलकती है ।

इन्सान जिन्दगी में सोचता कुछ और है और होता कुछ और है । नियती के हाथों की वह कठपुतली मात्र है, जिसकी डोर किसी और के हाथों में होती है । सोमा की जिन्दगी उस नाव की तरह है जो तूफान में फँसने के बाद स्थिर नहीं रहती, उन लहरोंपर मोजोंपर इस तरह डोलती रहती है जिसे किनारे पर पहुँचने की अभिलाषा हो, पर बचने की उम्मीद ना हो ।

लेखक ने यहाँ सोमा को काफी दिलचस्प बनाया है क्योंकि पाठकोंकी जिज्ञासा ज्यों कि त्यों बनी रहती है । जैसे जैसे हम सोमा का चरित्र चित्रण करीब से जानने लगते हैं, हमें यह महसूस होता है कि, अब सोमा का क्या होगा ? सोमा की जिन्दगी कैसे गुजरेगी ? सोमा के जिन्दगीकी इस कटी हुअी पंतग को कौन थामेगा ? सोमा जहाँ भी जाती है उसे मुसीबतोंका सामना करना पडता है । हर मनुष्य को जिन्दगी जीने के लिए एक सहारे की जरूरत होती है, और हर नारी

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.८७ ।

२ वही पृ.८९ ।

यही अनुभूती चाहती है कि वह सहारा मजबूरी का ना हो,लाचारी का ना हो, बेबसीका ना हो । उसमें कसक हो,प्यार हो,हमदर्दी हो । सोमा भी यही चाहती है । यशपाल नें सामा ` को उपन्यास का केन्द्रबिंदू बनाकर एक अबला और बेबस भारतीय नारी के जीवन का दस्तावेज प्रस्तुत किया है । इतनी मजबूरीयाँ झेलनेपर भी सोमा अटल और दृढ है । हर मुसीबतोंका सामना कस के करती है । यशपाल को यह सिध्द करना है कि, प्राप्त परिस्थिति में भी नारी को डगमगाना नहीं चाहिए । हर परिस्थिति का मुकाबला करनेकी उसमें हिम्मत और हौसला होना चाहिए ।

६) परिस्थिति के अनुरुप परिवर्तनशीलता --

सोमा बचपन से लेकर जवानी तक परिस्थितिसे समझौता करती नजर आती है । उसमें स्वतंत्र व्यक्तित्व का अभावसा नजर आता है । सोमा का चरित्र जानने से बाद यह महसूस होता है कि वह शुरु से ही परिस्थिति के मायाजाल में फँसी रही है । सुरेशचंद्र तिवारी का कथन है --" वह परिस्थितियों व्दारा संचलित कठपुतली मात्र है " [१] उसके,इस परिवर्तन, को कई आलोचक पतन समझते है तो कई उसके जीवन यापनका मार्ग,लेकिन सोमा का चरित्र जानने के बाद यह महसूस होता है कि,सोमा हालात का शिकार है । उसका अभिनेत्री बनना भी समाज और हालात के साथ किया हुआ समझौता है । वह एक सुस्थिर जीवन की अभिलाषा करती है इसीलिए वह धनसिंह के बारे में पूरी जानकारी न होते हुये भी एक सीधा-साधा जीवन बिताने के लिए निश्चल मन से निकल पडती है । उसे इस बातका क्या अंदाजा कि,किस्मत भविष्य में उसके साथ बहुत बडा मजाक करनेवाली है । उसका यह कहना था` दुनिया मेरे गले में बाहें गलकर खेलना चाहती है,परन्तु बाहे थामकर सहारा देने के लिए कोई तैयार नहीं ।" [२]

---

१ यशपाल - यशपाल और हिंदी कथा साहित्य - पृ.११५ ।

२ डॉ.सुनीलकुमार लवटे - यशपाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व - पृ.१८१ ।

सोमा के चरित्र को पतन नहीं कहा जा सकता क्योंकि वह हालात का शिकार थी । अभिनेत्री,मान-सम्मान,अपमान,नफरत,सुख-दु:ख उसे समाज से मिला । किसी मनुष्य में यह गुण जन्मगत होना असम्भव है । समाज में रहना है तो परिस्थिति के अनुरुप परिवर्तनशीलता आवश्यक है । अगर राजनीतिक,सामाजिक, परिस्थिति में समाज में जीना है तो समाज में रूढ परंपरा के अनुसार खुद को ढालना, इसी में जीवन की भलाई है,इसीलिए हम सोमा को निर्दोष ही कहेंगे । यशपाल जी की दृष्टि से स्त्री की पवित्रता मन से होनी चाहिए ,शरीर से नहीं [१]।

सोमा का सुतलीवाला के साथ समझौता और अन्त में धनसिंह को अपना परिचय न देना,हालातों में झुलस जाने से आये हुए अनुभवोंका निचोड है । `सोमा` प्रस्तुत उपन्यास का सबसे सशक्त पात्र है,किन्तु हर जगह उसके स्वतंत्र अस्तित्व और व्यक्तित्व का अभाव है ।

पीडित ,अबला और बेबस नारियों को समाज में परिस्थिति के अनुरुप परिवर्तित होने की और उसीके साथ जीने की नयी उमंग यशपाल जी की प्रेरणा है ।

धनसिंह --

`सोमा` की तरह `धनसिंह` भी इस उपन्यास का प्रमुख पुरूष पात्र है । लेखक ने धनसिंह के व्यक्तित्व का चित्रण अनेक अंगोंसे किया है । उसके चित्रण में विविधता है ।

१) निर्धनता एक अभिशाप --

धनसिंह का जन्म एक निर्धन परिवार में हुआ । बचपन से ही माँ का साया सिर से उठ चुका था । पिताजी लाहौर में नौकरी करते थे । घर की थोडी खेती थी । उसी से पूरा परिवार गुजारा करता था । गाँव में ताऊ के घर रहकर

---

१ डॉ.योगेश सूरी - यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ - पृ.१२४ ।

शिक्षा लेता था । सिरपर साहुकार का ऋण होने के कारण उनके घर में छोटे-मोटे काम करने पड़ते थे । पिताजी की मृत्यू के बाद खच्चरे हाँकने का, मोटर अड्डे पर कुलीगिरी, क्लीनर का काम करते करते ड्राइवर बनने का मौका मिला । यही से उसके ड्राइवर पेशे का प्रारंभ हुआ । इस प्रकार कठिनाईयोंसे जूझने के कारण स्वभाव में रूखाई और तीखापन आना स्वभाविक था । लेकिन वह दिलका बुरा नहीं, उसमें संवेदनक्षमता भी है । सोमा को जब वह अनाथ देखता है, अत्याचार और अन्याय से जूझते हुओ देखता है, तो सोचता है -- कितनी भली औरत है बेचारी ? कसाइयों के पंजे में फँसी हुई कैसे मुसीबत के दिन काट रही है । उसका इन लोगों के यहाँ है क्या ? मैं उसके लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हूँ । मेरा भी इस दुनिया में कौन है ? यही भावना उसे ' सोमा ' को भगा लेने के लिए प्रेरित करती है । " धनसिंह, लड़कपन से ही स्त्रियोंको धूर्त बिल्लियों की तरह समझता था जो धीमे मीठी बोलती है, ओट में रहती है, चोरी करती है और मौका लगने पर नोच लेती है । स्त्री मात्र के प्रति उसकी धारणा अविश्वास की थी । "[१] लेकिन धनसिंह सोचता है बेचारी सोमा कितनी सीधी, कितनी दुखी थी, उसमें कपट नहीं था । सोमा के स्वभाव का हर पहलू उसपर प्रभाव और विश्वास धारण करने के लिए मजबूर करता है ।

२) <u>क्षुद्र एवं निम्न वर्ग का शिकार --</u>

धनसिंह का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था, जवानी में भी धनसिंह एक निर्धन ड्राइवर था । वह जनम से कहार था । उसका नाम धन्नू था । उसका धर्म था, उँची जाति के लौगो की सेवा करना, किंतु " अपने उपर लादे गए शूद्रता के अपमान और दमन को अस्वीकार करने के लिए, उँची जातवालों की समानता और बराबरी में बैठ सकने के लिए वह विद्रोह में बोलता था । "[२] उसका जीवन अभावग्रस्त स्थिती में गुजरा था, अपने जीवन में वह काफी ठोकरे खा चूका था ।

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.१३ ।

२ डॉ.सलीम वेंकटेश्वरराव - यशपाल के उपन्यास समस्यामूलक अध्ययन - पृ.१४६ ।

३)　　<u>इन्सानियत और प्रेम का पुजारी</u> --

धनसिंह एक सच्चा प्रेमी है। अंततक प्रेम में वफादार रहता है। अपने प्रेमिका की सच्चे दिल से पूजा करता है। छल,कपट,साजिश से वह कोसों दूर रहना चाहता है, क्योंकि बचपन से युवा अवस्था तक पुलिस के हथकंडों का शिकार बन चुका था। पुलिस के प्रति उसके मन में नफरत और डर समाया था। नफरत इसीलिए थी की 'सोमा' ने उसकी सुरक्षा के लिए उसके बचाव के लिए पुलिस के हाथों खुद को समर्पित किया और 'सोमा' पर किए गए अत्याचारों के बारेमें उसे मालूम हो चुका था और डर इसीलिए कि,पिता की मृत्यू के पश्चात पुलिस की शक्ति और जुल्मोंका दौर अपनी आँखोसे देख चुका था, इससे उसके मन में पुलिस के प्रति विद्रोह था। यही नफरत उसे आजादी के आंदोलन से जोड देती है। पुलिस और जेल से भागते के सिलसिले में उसे फिर जेल होती है। जेल में साथियों की संगत से उसके दिल में राष्ट्र के प्रति अभिमान की भावना जागृत होती है। उसकी विशेषत: यह है कि,अंग्रेजी फौज में होकर भी हिंदूस्थान को आजाद करनेकी उमंग रखता है। देश के लिए मर मिटना यही उसकी धारणा है। रिश्वत से,अपराधों से घृणा होते हुअे भी उसे हर मोडपर उसी बुरे दौर से गुजरना पडता है।

४)　　<u>स्वाभिमानी पुरुष</u> --

धनसिंह एक स्वाभिमानी युवक है। बिना वजह ट्रक मालिक से माफी माँग उसके जूते चाटना उसे स्वीकार नहीं। अपने पवित्र प्रेम की और वासना से देखनेवाले पुलिस की वह लातों-घूसों से मरम्मत करता है। वह परम्परावादी विचारोंका युवक है। उसके विचार उच्च है। नारी को आश्रय देना,उसकी रक्षा करना हर पुरुष का धर्म है। नारी के प्रति अत्याचार और अन्याय का बर्ताव देख उसका खून खौल उठता है। उसके इस स्वभाव के कारण 'सोमा' के साथ किये गये अत्याचार और अन्याय को वह बर्दास्त नहीं कर सकता इसलिए उसे साथ चलने के

लिए अनुरोध करता है, कुछ दिन गुजर जाने के बाद 'सोमा' से आत्मयिता के साथ कहता है कि," तुझे लेने आया हूँ।"[१] सोमा की सिसकियाँ और तडफ देखने से उसे दु:ख होता है। वह उसे दिलासा देता है,उसके इसी बर्ताव में आत्मीयता झलकती है।

५) हालात का शिकार --

लेखक ने इस उपन्यास में 'धनसिंह' का जीवन एक सामान्य का जीवन बनाया है। वह हालात और मजबूरीका दास बनके रहा है, क्योंकि परिस्थिति के प्रति विद्रोह करने की क्षमता के अभाव में ही ऐसे हुआ है। जिंदगी है इसीलिए जीना है। जीने के लिए सबल बनना उसके बस की बात नहीं। व्यवस्था के चरित्र को न पहचान पाना उसकी सबसे बडी भूल है।

६) ड्राइवरों के शोषित जीवन से सामना --

इस उपन्यास में यशपाल ने धनसिंह को उपन्यास का केन्द्रबिंदू बनाकर ड्राइवरों के शोषण पर प्रकाश डाला है। ड्राइवेरी जीवन देखिए --" ड्राइवर का क्या है? मौसमी पंछी है। हर वक्त जान जोखिम में डालना,इश्क का रोग पालना जैसे ड्राइवर के बस की बात ना हो। सरकार और मालिक इन दोनोंके बीच मजदूर या ड्राइवर ही पिसके रह जाता है," यह शोषण,किसी क्षेत्रविशेष में न होकर समाज के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त है। इस प्रतिस्पर्धापूर्ण वैज्ञानिक युग में 'शोषण' की नयी नयी पध्दतियाँ अविष्कृत हो चुकी है।[२]

शोषण मनुष्य की सहज प्रवृत्ति बन जाती है और एक शोषक दूसरे शोषक का साथ देता है। ये दोनोंही मजदूरोंके शत्रू होते हैं। इन सब में सब से बडी बाधा है नौकरों का अन्धविश्वास और स्वामिभक्ति। अपने शत्रू को न

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.३० ।

२ डॉ.सलिम वेंकटेश्वरराव - यशपाल के उपन्यास समस्यामूल्य अध्ययन - पृ.२४३ ।

पहचानने की उनकी अज्ञानता, क्योंकि नौकर मालिक को अपना अन्नदाता और भगवान समझ बैठता है। यही शोषक वर्ग की विडम्बना है। भगवान ने मालिक को केवल मजदूरों को पालने, उसकी परवरिश का एक साधन बनाया है, लेकिन मालिक अपने मजदूर का इस तरह शोषण करता है जैसे उसे इस बात का कानूनी हक हो, और अंधविश्वास में बेखबर मजदूर इस तरह लूट जाता है। जैसे उसे मालिकों के शोषण की खबर ही ना हो।

यशपाल ने धनसिंह ड्राइवर के माध्यम से देश में चले इस पेशे को समाज के सामने प्रस्तुत कर मजदूरोंको जागृत होने की सलाह दी है।

७) राजनीतिक जीवन : एक संघर्ष —

धनसिंह को देश के प्रति शुरु से ही प्रेम है। आजादी के लिए कुछ करने की सोच रहा था कि, "एक दिन वह आजाद हिंद के रेडिओ पर नेताजी का सन्देश सुनता है और फौज में दाखिल होता है आजाद हिंद के सिपाही, छापा मार उसे अपने फौज में लाते हैं। आगे फौज पर लगाये मुकदमे के बाद वह रिहा होता है।" [१]

अंत में जब पहाडन से मुलाकात के लिए जाता है तो पहाडन उसे पहचानने से इन्कार करती है। हाथापाई में जब भूषण की हत्या होती है तब पुलिस धनसिंह को फिर हिरासत में लेती है। इस प्रकार राजनीतिक जीवन भी संघर्ष में गुजारना पडता है।

मनोरमा --

१) आधुनिक नारीयों की झलक --

उपन्यास में यह आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती नजर आती है।

---

१ डॉ. सुनीलकुमार लवटे - यशपाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व - पृ. १६९।

मनोरमा धर्मशाला निवासी लाला ज्वालासहाय की पढी लिखी लाडली बेटी है। आधुनिक विचारोंका उसपर काफी प्रभाव है। पढी लिखी होकर भी वह गर्व महसूस नहीं करती। सोमा के बारे में जब वह सुनती है,तो वह बेसहारा सोमाको अपने घर में सहारा देती है। धनसिंह के प्रति भी उसके दिल में अपनत्व है। ईर्ष्या और अहंकार से वह कोसों दूर है। सोमा के साथ नौकरानी जैसा बर्ताव करना उसे कतई अच्छा नहीं लगता। वह सोमा से अपने परिवार कासा बर्ताव करती थी। " मन्नो उसकी चिन्ता ऐसे करती थी जैसे माँ बीमार बच्चों की खबरदारी करती है।" [१]

वह सभी से स्नेह और अपनत्व से पेश आती थी।

उसमें आधुनिक नारियों की झलक होकर भी वह एक सीधा-साधा जीवन बीतानेवाली नारी है जो दूसरों के दु:खों को अपनी झोली में लेकर दूसरों पर हमेशा खुशीयों के फूल बरसाती रहती है।

२) स्वतंत्र अस्तित्व --

मनोरमा के जीवन में दूसरों के लिए त्याग करनेकी भावना है। अपने खातिर किसी महिला की नौकरी जाते देख,उसके उत्कर्ष के लिए नौकरी छोडने में कोई परेशानी महसूस नहीं करती।

मनोरमा की लिखने की ओर रूचि थी। उसने कुछ कहानियाँ लिखी थी और लेख भी। उसकी कल्पना में लेखक बनने का आदर्श था, जिसमें कीर्ति,निर्वाह का साधन और आत्मसन्तोष की सभी आशाएँ पूरी हो सकती थी। बैरिस्टर जगदीश ने मनोरमा को लेखक बनकर निर्वाह करने की महत्वाकांक्षा की बात सुनी तो हँसकर कह दिया --" यदि तुम इस देश में लिखकर जीविका कमा सकोगी तो तुम रवि ठाकुर बन जाओगी।" [२]

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.४३।

२ वही पृ.८०।

मनोरमा इस परिहास पर भी हताश और निराश नहीं हुई । उसने अपनी पढाई और ज्ञान का सदुपयोग अध्यापिका बनकर समाज की सेवा करनेका निश्चय किया । इसमें उसके व्यक्तित्व की झलक मिलती है ।

जब उसकी उम्र बढ जाने से उसके विवाह के बारे में चर्चा होने लगी, सोमा के माध्यम से उसे ताने देने लगे और पिता के सिर पर रहते ही बँटवारे की बातें होने लगी और इस प्रसंग को लेकर झगडे होने लगे, तब मनोरमा को ऐसे वातावरण में रहना असम्भव जान पडा । वाक्‌युध्द में ऐसी परास्त हुई कि, उस ने सिव्हिल मैरेज करने का निश्चय किया । यहाँ वह अपने पति का चयन करके अपने स्वतंत्र अस्तित्व का परिचय देती है ।

३) गृहस्थी जीवन की अभिलाषा --

नारी होने के नाते गृहस्थ बनने की सबल इच्छा उसमें दृष्टिगोचर होती है । भूषण से वह दिल ही दिल में प्यार करती है । परन्तु भूषण का रूखापन उसे हमेशा भूषण के करीब होते हुये भी अलग ही महसूस होता है । वह घर के तंग हालातों से उक्ताकर सुतलीवाला को अपनी इच्छा से पति के रूप में स्विकार करती है । जब पति के पुरूषात्वहीन होने का पता चलता है तो परेशान और नाराज हो जाती है । गृहस्थी जीवन में उसके पश्चात् वह खुश नहीं रहती । वह अत्यंत स्वाभिमानी है । शील ही नारीका सर्वस्व है, यह भारतीय नारीका विचार उसमें कूट कूट के भरा हुआ है । सुतलीवाला उसे व्यवसाय वृध्दि का साधन बनाना चाहता है ताकि वह पूँजीवादीयों को और सेठों को रिझाकर पति के व्यवसाय में मदत करें लेकिन मनोरमा एक जागृत पत्नी होने के नाते इस बात का कडा विरोध करती है । इस विरोध का फायदा उठाकर सुतलीवाला उससे तलाक चाहता है, मनोरमा कडवे घूँट पीकर रह जाती है । सुतलीवाला से गुजारा मिलने की अभिलाषा भी नहीं करती

४) सच्चे प्रेम की पुजारन --

वह प्रेमिका भी है। कॉलेज के दिनोंसे दिल ही दिल में अपने समविचारी कामरेड भूषण से प्यार करती है। एक संयमी प्रेम है,उसमें वासना का लवलेश भी नहीं है। कामरेड भूषण का रुखा व्यवहार वह हंस के सह लेती है। कभी उससे उस बारे में शिकायत नहीं करती। परिस्थिति से समझौता कर सुतलीवाला से विवाह करती है। सुतलीवाला से तलाक होती है। उसके बाद भूषण से उसकी मुलाकात होती रहती है, लेकिन उसके दिल में भूषण के प्रति केवल आत्मीयता होती है। सुतलीवाला से तलाक के बाद भी भूषण से विवाह करने के लिए वह उतावली नजर नहीं आती। यशपाल ने मनोरमा के रूप में ऐसी मर्यादाशील,आधुनिक नारी का निर्माण किया है,जिसमें विद्रोह और समायोजन भरपूर है। यह पात्र गौण होते हुअे भी पाठकों को अपनी ओर आकृष्ट करती है।

प्रेम के संबंध में मनोरमा के व्यक्तिगत विचार है।" आत्म-निर्भर प्रेम तो वही है जो मूल्य का आश्रय न मांगे।" [१]

५) आदर्श नारी --

यशपाल ने मनोरमा के चरित्र के माध्यम से उच्च घर की सुशिक्षित नारीयों का विशद वर्णन किया है। उसमें आधुनिकता का रूप होते हुअे भी उसका चरित्र,त्याग और कर्मशीलता की भावनाओं से ओत-प्रोत है। सोमा के साथ उसने सदैव समानता का व्यवहार किया तथा अपने प्रेम,स्नेह,व्दारा उसे ऊँचा उठाया। मनोरमा,सोमा से इतना प्रेम करती है, या यों कहिये की यह उसके हृदय की विशालता ही है जिसके कारण अपने पति के साथ सोमा का संबंध जानकर भी उससे सहानुभूति रख सकी। मनोरमा में कर्मशीलता और त्याग की भावनाओं का संतुलित रूप दृष्टिगत होता है।

---

१ सुदर्शन मल्होत्रा - यशपाल के उपन्यासों का मूल्यांकन - पृ.८९।

भूषण --

१) मार्क्सवादी विचारों का प्रभाव --

कांगडा निवासी भूषण ने लाहौर से बी.ए.की परीक्षा उत्तीर्ण की । कॉलेज जीवन में ही मार्क्सवादी विचारोंसे प्रभावित होकर पार्टी का प्रचार कार्य करता था । घर के हालात गरीबी के होते हुअे भी दर्शनशास्त्र जैसे जटिल विषय में एम.ए.पास किया, उसकी दिली ख्वाहिश थी की,वह प्राध्यापक बने लेकिन दुर्भाग्यवश बैंक का क्लार्क बन जाता है। " योरूप में सन १९३९ में छिडे युध्द में भारत को घसीट जाने का विरोध करने के लिए नौकरी छोडकर राजनीति में सक्रिय बन जाता है । "[१] यहीं से उसके राजनीतिक जीवन की शुरुआत होती है ।

२) नारी के प्रति दृष्टिकोण --

भूषण के सहपाठी बैरिस्टर सरोला के कारण बैरिस्टर की बहन मनोरमा से उसका परिचय होता है । मनोरमा भी एक साम्यवादी विचारोंकी नारी है । उसकी यही प्रवृत्ति उसे मनोरमा के प्रति आकर्षित करती है । मनोरमा के साथ राजनीतिक विवाद या संघर्ष लढने में उसे बडा मजा आता है । मार्क्सवादी होने के कारण प्रेम के द्वन्द्वात्मक गति का समर्थन करता है उसे स्वीकार करता है ।

३) प्रेम एक तपस्या --

भूषण प्रेम को तपस्या माननेवाला युवक है । मनोरमा के प्रति उसके हृदय में हमेशा ही मित्रत्व की भावना झलकती है । उसमें प्रवृत्तिगत शारीरिक इच्छाओं का लवलेश भी नहीं है । मनोरमा के कहने पर अंत मे वह धनसिंह और

---

१ डॉ.सुनीलकुमार लवटे - यशपाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व - पृ.१८५ ।

सोमा को मिलाने का यत्न करता है। मनोरमा के साथ उसकी हमदर्दी अंत तक बनी रहती है। मित्र के नाते वह हर मुसीबत में उसका साथ देता है। भूषण इन धनी लोगों के साथ मित्रत्व भरा व्यवहार करता है लेकिन भूषण के विचार है कि धन वह कारण है जो मनुष्यों में आपसी द्वेष उत्पन्न करता है,उन्हे श्रेणीयों में बाँट देता है" द्वेष के कारण को मिटाना हो तो उसकी अपेक्षा नहीं करनी चाहिए, उस कारण को दूर कर देना चाहिए।"[१]

प्रेम के सम्बन्ध में भूषण का दृष्टिकोण केवल भावुकता और श्रध्दा पर आधारित नहीं,वह व्यावहारिक एवं सन्तुलित है। प्रेम के पक्ष तथा विपक्ष पर प्रकाश डालते हुअे भूषण कहता है --" यदि वह (प्रेम) बिल्कुल छिछला और उथला रहे तो वह असंयुत वासना मात्र बन जाता है और यदि जीवन में प्रेम या आकर्षण का संयम विवेक से न हो तो वह जीवन के लिए घातक हो जाता है।"[२]

४) <u>सच्चा समाजसेवक --</u>

देश के प्रति अभिमान की तीव्र भावना दृष्टिगोचर होती है। वह सच्चा समाजसेवक है। समाज में कोई पीडित या अबला नजर आती है तो उसका दिल दु:खी होता है,मायूस होता है। जब सोमा अकेली हो जाती है तो भूषण उसे मनोरमा के घर का आश्रय दिलाता है। अपने इस आचरण व्यवहार के कारण सभी पात्रों में बुध्दिजीवी पात्र बन के रहा है।

५) <u>सामाजिक कार्यकर्ता --</u>

" भूषण ही एक ऐसा पात्र है जिसका जीवन साम्यवादी सिध्दान्तों के अनुकूल ढला हुआ है"[३] उसके माध्यम से यशपाल ने जीवन के व्यावहारिक पक्ष पर

---

१ डॉ.ह.श्री.साने - यशपाल के उपन्यास सामयिक चेतना - पृ.५६।

२ डॉ.चमनलाल गुप्ता - यशपाल के उपन्यास सामाजिक कथ्य - पृ.४४।

३ डॉ.सुदर्शन मल्होत्रा - यशपाल के उपन्यासों का मूल्यांकन - पृ.९०।

बल दिया है। भूषण स्पष्ट वक्ता है। भूषण भद्र समाज के प्रति शंकालु है। भद्र समाज पर तीव्र व्यंग कसते हुऐ कहता है --" वहाँ केवल भय है। उस व्यक्तिगत सहृदयता के मूल में क्या है। समाज में जो कुछ अछा है,वह सब छीनकर तुम लोगों के भद्र समाज की रचना कर ली गई है।"[१] कामरेड भूषण के चरित्र में यशपाल के विचारों और आदर्शों की स्पष्ट छाप मिलती है। एक बहुत ही परिश्रमशील कार्यकर्ता के रूप में चित्रित किया गया है। यशपाल जी ने जिन सामाजिक स्थितियों में पात्रों का चित्रण किया है वह यथार्थ की कसौटी पर प्रत्यक्ष निरीक्षण से दृढ आधारपर स्थित होने से अवलोकन और अनुभव की शास्त्रीयता के निष्कर्ष पर खरे उतरते है।

" यथार्थ की प्रतिबध्दता के कारण यशपाल जी की समाजमीमांसा भी उच्च स्तर की हुई है" उच्च स्तर की बात अधिकतम वैचारिक,सैध्दान्तिक स्तर की है और भविष्य के समाज का संकेत करती है।"[२] इसी कारण उसके यथार्थ अभिप्राय को समझना ही समाज के लिए हितकर है।

अन्य पात्र --

उपर्युक्त प्रमुख पात्रों के आलावा उपन्यास में अन्य भी कई पात्रों का चित्रण हुआ है, मगर उनका चित्रण संक्षिप्त हुआ है। कथा को एवं प्रमुख पात्रों के चरित्र को गतिशील बनाने के लिए इन गौण पात्रों की सहायता ली गयी है। यशपाल जी के चरित्रांकन की एक विशेषता यह है कि वह गौण से गौण पात्र का चरित्र उभारकर उसे वैशिष्ट्य प्रदान कर उसके साथ न्याय करते है। किसी भी पात्र की उपेक्षा नही की गई है। इन गौण पात्रों में कुछ पात्र निम्न है।

विलायत से लौटे हुए' बैरिस्टर जगदीश प्रसाद सरोला' तार्किक और आधुनिक विचारों के है। अपनी पत्नी से संतोष न पाकर वे अपनी नौकरानी सोमा की ओर झुकते है। लेकिन सोमा को घर से निकाले जाने पर वे कुछ नहीं कर सकते। इस प्रकार यशपाल ने जगदीश सरोला को उच्च मध्य वर्ग के

१ डॉ.सुदर्शन मल्होत्रा - यशपाल के उपन्यासों का मूल्यांकन - पृ.९० ।

२ डॉ.ह.श्री.साने - यशपाल के उपन्यासों में सायिक चेतना - पृ.२९ ।

प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत कर उस वर्ग के लोगों का बड़ा यथार्थ और सफल चित्रण किया है ।

फिल्मी ऐजेन्ट सुतलीवाला फिल्म उद्योग से सम्बन्धित एक व्यवसायी व्यक्ति है । यहाँ तक कि अपनी पत्नी को भी रूपया कमाने का साधन बनाना चाहता है । लेखक ने यहाँ फिल्मी दुनिया के व्यवसायियों और ऐजेन्टो का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है ।

बरक्त पतित गुंडा, क्रूर और पुरोपजीवी व्यक्ति है तो बनवारी एक अनुभवी व्यक्ति है जो सोमा की सहायता निस्सन्देह निष्कपट भाव से करता है, परन्तु व्यक्तिगत सिध्दि के लिए दूसरों की खुशामद करना बुरा नहीं समझता । भोग विलास ही अपने जीवन का ध्येय समझता है । सोमा एक-एक करके अनेकों के समक्ष आत्म समर्पण करती है किन्तु उपन्यास में कोई भी ऐसा पात्र दृष्टिगोचर नही होता जो सोमा का निश्चयपूर्वक और दृढपूर्वक हाथ थाम उसे अपना बना सके । यशपाल ने सोमा के माध्यम से इसी सच्चाई पर कुठराघात किया हैं ।

संक्षेप में पात्रों की विविधता की दृष्टि से ' मनुष्य के रूप ' अत्यन्त सफल है । इसमें प्रत्येक पात्र अपना पृथक अस्तित्व रखता है, इन पात्रों में व्यक्तिगत विशेषताएँ ही अधिक है । यशपाल जी के सूक्ष्म निरीक्षण, व्यापक अनुभव और अध्ययन का प्रमाण विविध पात्रों को स्पष्ट रूप में अंकित करने की उनकी शक्ति है । यशपाल जी ने पात्रों के चित्रण में उनकी विशिष्ट परिस्थितियों की ओर विशिष्ट ध्यान दिया है । उसका कारण है कि लेखक पात्रों के प्रति पाठकों में संवेदना जगाना चाहते हैं । उनके पात्र जीवन की सामाजिक और आर्थिक विषमताओं के परिणामस्वरूप संघर्ष, परिवर्तन अनुभव करते है । कथा को रंजक एवं गतिशील बनाने के लिए लेखक ने खूबी से उनका चित्रण किया है ।

निष्कर्ष

सोमा के चरित्र चित्रण के माध्यम से लेखक ने सिनेमा-जगत् की कटुता और वास्तविकता के घिनौने रूप का पर्दाफाश कर दिया है। समाज के कुत्सित, घिनौने, तिरस्कृत तथा अपमानित रूप का चित्रण ही लेखक का प्रधान उद्देश प्रतीत होता है। नारी की दयनीय स्थिति, उच्च तथा निम्नवर्गीय परिवारों में दमित यौन-भावना, संयुक्त परिवार की समस्या तथा सिने-जगत की समस्याओं का चित्रण बडी कुशलता से यथार्थ भूमि पर किया गया है। साथ ही नारी समस्या और नारी की दुर्बलताओं पर प्रकाश डाला गया है।

यशपाल एक क्रांतिकारी उपन्यासकार थे। उनके पात्र केवल अपने सुख - दु:ख से प्रेरित होकर ही क्रियाशील नहीं होते बल्कि समाज का पथ प्रदर्शन, मानवता विरोधी रूढियों तथा परम्पराओं के लिए भी संघर्ष करने का उत्सुक दिखाया पडते हैं। इसके साथ ही यशपाल एक सामाजिक कलाकार थे। उनके समस्त पात्र समुदाय में ही फूलते-फलते और पनपते हैं इसीलिए उनके उपन्यास में सामुदायिक मानव की मनोवृत्तियाँ, नैतिकता, आत्मनिर्भरता पर बल दिया गया है।

इससे यह सिध्द होता है कि, प्रकृति की तरह प्रेम भी परिवर्तनशील है। भौतिक परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ मनुष्य की चेतना भी बदलती रहती है, और मनुष्य की चेतना जब-जब बदलती है, तब-तब प्रेम नैतिकता के संबंध में मनुष्य की धारणा बदलती है। सोमा के चरित्र के विविध मोड उसकी परिस्थितियों की देन है।

यशपाल जी ने सोमा को एक ऐसा पात्र बना दिया की वह परिस्थितिका शिकार है। वह सब हालात और मजबूरी से करती है याने वह सहानुभूती और हमदर्दी का पात्र है।

गीतकार नीरज ने ठीक कहा है ।

" यूँ न इतराओ सफेदी देखकर अपनी
दर धूली चादर गुनाह की कमाई है ।"

' धनसिंह ' भी जनम से गरीब और लाचारी का शिकार रहा है । अंत तक न वह पक्का सोशिलिस्ट बन पाया , न पक्का प्रेमी ।

दोनों अपराजेय योध्दा की भाँती जीवनभर संघर्ष करते रहें, किन्तु अपने संघर्ष को सार्थक विद्रोह में नहीं बदल पाते । यशपाल जी ने सोमा ' के रूप में विधवा नारी की मजबूरी और बेबसीको प्रेक्षेपित किया है ।

यशपाल ने भूषण के माध्यम से पवित्र प्रेम का उदाहरण प्रस्तुत किया है । कामरेड भूषण के चरित्र में यशपाल के विचारों और आदर्शों की छाप मिलती है । मनोरमा के जरिए लेखक ने भारतीय नारी के त्याग और आदर्श की सराहना की है ।

यशपाल जी ने समाज में व्याप्त विसंगतियाँ तथा अनैतिकताओं को समाज और प्रशासन के सामने रखकर यह घोषित किया है की ,जिस समाज और शासन व्यवस्था के अन्तर्गत यह सब हो रहा है, उसे बदल डालना चाहिए तभी जीवन को सही अर्थों से नैतिकता मिल सकती है ।